** प्रख्यापन **

** धूमिल के काव्य में आधुनिक बोध **

यह शोध प्रबंध मेरी मौलीक रचना है, जो एम. फिल. के लघुशोध प्रबंध के रुप मे प्रस्तुत की जा रही हूँ। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई।

सातारा.

दिनांक :- 30-12-94

प्रा. कु. हेमलता शंकरराव क्षीरसागर

अनुसंधाता

प्राचार्य,
लाल बहादूर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा.

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे
लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा

प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा
एम.ए.एम.फिल, पी.एच.डी.
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय, फलटण.
जि.सातारा (महाराष्ट्र)

xxx प्र मा ण प त्र xxx

मैं प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण यह प्रमाणित करता हूँ कि, कु. हेमलता शंकरराव क्षीरसागर ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम्.फील (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध **"धूमिल के कावरू में आधुनिक बोध"** मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ स्फलतापूर्वक पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है।

मै सुस्तुति करता हूँ कि, इसे परीक्षा हेतू अग्रेषित किया जाय।

निर्देशक

प्रा.डॉ.राजेंद्र शहा

(प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

xxxxxxxxxxx 0 xxxxxxxxxxx

** भूमिका **

बचपन से ही मुझे काव्य के प्रति लगाव था। एम् ए. का अध्यचन करते समय मेंने आधुनिक हिंदी कवियोंका अध्ययन किया था। आधुनिक काव्य का अध्ययन करते समय मैंने धूमिलजी के ' संसद से सडक तक " काव्यसंग्रह का अध्ययन किया। अत एम्.फील् करते समय धूमिल पर ही लघुकोश प्रबध लिखने का मैंने निश्चय किया किया।

मेरे निर्देशक प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा ने इस लघुकोश प्रबंध के लिए धूमिलजी के काव्यों के बारें में मेरे मन में अधिक रुचि पैदा की और उसी के फलस्वरुप मैंने "धूमिल के काव्य में आधुनिकता बोध" इस विषय को निश्चित किया ।

आधुनिक हिंदी साहित्य में नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में निराला, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, आदि कवियोंके साथ और एक नाम महत्वपूर्ण है यह है कवि धूमिलजी का।

"धूमिल के काव्य में आधुनिकता बोध का" विश्लेषण मैंने नौ अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय :–

मेरे पहले अध्याय में आधुनिक बोध स्वरुप विवेचन, इसमें आधुनिकता की परिभाषा, आधुनिकता और इतिहास बोध, आधुनिकता और परंपरा, आधुनिकता समसामयिकता नहीं एक जीवन दृष्टि, आधुनिकता और विज्ञान का प्रभाव आधुनिकता ओर कविता, आधुनिकता और यथार्थ आदि का परिचय होगा।

दूसरा अध्याय :–

दूसरे अध्याय में धूमिल के काव्य की अवधारणा तथा "धूमिलजी का जीवनवृत्त", "व्यक्तित्व और कृतित्व" होगा। इसमें धूमिलजी की जन्म, शिक्षा, दीक्षा, तथा उनके कृतित्व की चर्चा की जायेगी।

तीसरा अध्याय :–

तीसरे अध्याय में सर्वहारा निम्नवर्ग, उच्चवर्ण, मध्यवर्ग तथा धूमिल के आधुनिक सामाजिक विचार आधुनिक राजनीतिक विचार आदि देखा जायेगा।

चौथा अध्याय :–

चौथे अध्याय में मानवीय सामाजिक संवेदना, राजनीतिक समस्या, भाषा की समस्या नारी समस्या यौन समस्या, आदि साथ ही भूख, ऊब, सहनशीलता, प्रजातंत्र, भ्रष्टाचार, पूँजीपतियों बुद्धिजीवी वर्ग क्रांति आदि का विश्लेषण होगा।

पंचम अध्याय :–

पंचम अध्याय में राजनीतिक व्यवस्था, चुनाव व्यवस्था, शोषण स्वतंत्रता, जनतंत्र, संसद, संविधान आदि को देखा जायेगा।

छटा अध्याय :–

छटे अध्याय में वैचारिक क्रांति का स्वर, पीडा उपेक्षा, आक्रोश, विकृतियों एवं जटिलताएँ, कटूक्ति की चर्चा की जायेगी।

सातवाँ अध्याय :–

सातवे अध्याय में समाज की आर्थिक दशा का चित्रण होगा।

आठवाँ अध्याय :–

आठवें अध्याय में धूमिल ने जो शिल्पगत, अलंकार, छंद शैली, भाषा आदि में नये–नये प्रयोग करके अभिव्यंजना पध्दति को अधिक उत्कृष्ट बनाया है–इसकी चर्चा की जायेगी।

समापन :–

समापन इस अध्याय में पहले अध्याय से लेकर आठवें अध्याय तक किये गये विवेचन के आधारपर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

मेरे निर्देशक प्रा.डॉ. राजेंद्र शहाजी ने अपले कार्यभार में व्यस्त होते हुए भी अपना अमूल्य वक्त मुझे देकर इस वृत्ति का एक–एक पृष्ठ देखा, पढा और सुधारा। इस लघुशोध प्रबंध की समस्त अच्छाईयाँ और मौलिक उपलब्धियों का पूरा श्रेय पूज्यवर प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा जी की है। मेरी समझ में नहीं आता कि उनके इस सुयोग्य पथ–प्रदर्शन के लिए कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त की जाय।

कवि धूमिल का अध्ययन करते समय सामग्री संकलन तथा बार–बार चर्चा के द्वारा मुझे प्रेरणा देनेवाले और अपना बहुमूल्य समय देकर मुझे मार्गदर्शन करनेवाले आदरणीय डॉ. सुर्वेजी के प्रति विशेष आभार हूँ।

मेरे पिताजी, भाई तथा भाई समान जिजाजी की मैं अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मेरी हर तरह से सहायता की। लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज के गत प्राचार्य अमरसिंह राणे तथा कॉलेज के नये प्राचार्य पुरुषोत्तम सेठ जी की मैं आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर मुझे मौलिक ग्रंथ तथा प्रेरणा दी।

मेरे इष्ट मित्रों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ जिनकी शुभेच्छा और

किताबों की सहायता के कारण ही मैं यह लघुतर कार्य संपन्न कर सकी।

एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा तथा भुवोजी कॉलेज फलटण के ग्रंथालय कर्मचारियों की सहायता के लिए मैं उनकी ऋणी हूँ।

मैं सौ. प्रतिम महाजनी "प्रितम एजन्सी" सातारा की आभारी हूँ जिन्होंने इस लघुशोध प्रबंध का अच्छा टंकन किया।

इस लघुशोध प्रबंध कार्य में सहायक सभी लोगों का नामनिर्देशन करना संभव नहीं। फिर भी उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

******** 0 *******